॥ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ॥



॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः॥

श्रीधन्वन्तारि-कृपाष्टकम्

पुस्तक प्राप्ति स्थान--

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

फोन नं0 - 01497 -227831

प्रथमावृत्ति--१०००

प्रकाशन सेवा

वैद्य नटवरलाल छगनभाई

मेहसाना (गुजरात)

मुद्रक--

श्रीनिम्बार्क मुद्रणालय

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

न्यौछावर

दश रुपये

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

समर्पणम्

धन्वन्तरिपदाम्भोजे धन्वन्तरिकृपाष्टकम्।
समर्प्यते च सश्रद्धं सर्वदानन्दसम्प्रदम्॥

शुभ मिति कार्तिक कृष्ण १३ सोमवार, श्रीधन्वन्तरि जयन्ती महोत्सव, वि. सं. २०७२ दिनांक ९/११/२०१५

समर्पकः-

श्रीराधामाधवपदकञ्जपरागकामः-
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

"श्रीधन्वन्तरिकृपाष्टकम्" का दिव्यभाव

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री "श्रीजी" महाराज की धन्वन्तरि जयन्ती पर स्फुरित अष्टकरूपा काव्यवाणी दिव्य भावों से सम्भरित है। देव और दानवों द्वारा किए गए समुद्र मन्थन के समय भगवान् धन्वन्तरि हाथों में अमृत कलश लेकर प्रकट हुए। यह समुद्र मन्थन विश्वकल्याण के लिए बहुत बड़ा कार्य सिद्ध हुआ। चतुर्दशरत्नों की प्राप्ति हुई। अमृत से पूर्व कालकूट भी प्रकट हुआ। प्रकृति के पञ्चतत्त्वों तथा उनसे बने हुए पदार्थ सुप्रयुक्त होने पर ओषधी का कार्य करते हैं। कालकूट भी सुप्रयुक्त होने पर ओषधी बन जाता है-कहा है-"विषस्य विषमौषधम्" इसीलिए भिषकों में भिषक्तम रुद्र ने अपने कण्ठ में इस कालकूट को धारण किया। पञ्चतत्त्व उत्तम भेषज है। वायु सामान्य नहीं विश्व भेषज है--

त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे।

ऋ. १०-१३७-२

"अग्निर्हिमस्य भेषजम्" अग्नि शीत की औषध है वह आयु प्रदात्री है। जल में ओषधी है-"अप्सु अन्तः अमृतम् अप्सु भेषजम्" भगवान् धन्वन्तरि समुद्र के अपेय जल से किरणों से प्राप्त होने वाला जल दिव्य ओषधी है। चन्द्रमा तो सुधाकर है ही। पृथ्वी अनेक ओषधियों और वनस्पतियों को प्रकट करती

है। अथर्ववेद में कहा है--

या ओषधयः सोमराज्ञी बह्वीः शतविचक्षणाः।
बृहस्पतिप्रसूतास्ता नो मुञ्चन्त्वहंसः।।

६-९६-७

इन्द्रादि देवताओं की प्रार्थना पर भगवान् धन्वन्तरि ने दिव्य औषधियों एवं उनका सुप्रयोग प्रकट किया। ऋग्वेद कहता है कि जिस विद्वान् के पास ओषधियाँ है वही भिषक् है, वही रोगों को दूर कर सकता है। ये ओषधियाँ समिति में उपस्थित राजाओं के समान है जो मिलकर जनता के कष्टों का निवारण करते हैं--

यत्रौषधीः समागता राजानः समिताविव।
विप्रः स उच्यते भिषक् रक्षोहामीव चातनः।।

ऋ. १०-९७-६

धन्वन्तरिजी समस्त ओषधियों के ज्ञाता हैं अतः वे असीम करुणासिन्धु हैं। भगवान् धन्वन्तरि द्वारा दिया गया ज्ञान और ओषधियाँ व्याधिग्रस्त को व्याधि से मुक्त करती हैं तथा स्वस्थ के स्वास्थ्य की रक्षा करती हैं। ओषधियाँ माता के समान हैं। संसार में पहला सुख नीरोगी काया को माना गया है क्योंकि नीरोगी शरीर ही धर्म का साधन है। (शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्)। भगवान् धन्वन्तरि को श्री ''श्रीजी'' महाराज ने सर्वसम्पूज्य, ज्ञान-विज्ञान-केन्द्र, श्रेयस्कर एवं आरोग्य दानदाता कहा है क्योंकि उनकी ओषधियाँ आरोग्य प्रदान करने वाली हैं। चरक

में कहा है--

तदेव युक्तं भैषज्यं यदारोग्याय कल्पते।
स चैव भिषजां श्रेष्ठो रोगेभ्यो यः प्रमोचयत्।।

अर्थात् जो आरोग्य प्रदान करे वही ओषधी है तथा जो रोगों से मुक्त करे वही श्रेष्ठ वैद्य है।

जगद्गुरुजी ने धन्वन्तरि को एक श्रेष्ठ भिषक् के रूप में ही स्मरण नहीं किया है अपितु उनको भगवान्, आनन्द का अधिष्ठान, दीनबन्धु और महामङ्गलरूप कहा है अर्थात् वे नारायण स्वरूप है। लोलम्बिराज के शब्दों में--

नारायणं भजत रे जठरेण युक्ताः
नारायणं भजत रे पवनेन युक्ताः।
नारायणं भजत रे भवभीतियुक्ताः
नारायणात् परतरं नहि किञ्चिदस्ति।।

धन्वन्तरि जयन्ती के शुभ अवसर पर दिव्य भावों से भरी हुई श्री ''श्रीजी'' महाराज की पवित्र वाणी हमें आरोग्य प्रदान करे तथा भगवद्भक्ति में संलग्न रखें यही कामना है।

धन्वन्तरि जयन्ती कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी सं.२०७२

श्री श्रीजी महाराज का कृपाकांक्षी-

डा. दूलीचन्द शर्मा
जयपुरमण्डलान्तर्गत-मुरलीपुरा (जोबनेर) ग्राम वास्तव्यः
प्राचार्य-श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय
निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद जि. अजमेर (राज.)

स्वकीयविचारधारा

अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधिपति, सर्वनियन्ता, सर्वेश्वर श्रीराधामाधव भगवान् जब अपनी कृपावृष्टि करते हैं, तभी इस मनुज जीवन में सत्कार्य सम्पादित होता है।

और तभी प्राणी उत्तम कार्य करने में प्रवृत्त होता है। उन सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर प्रभु के कृपाप्रसाद विना कथमपि कोई कार्य का शुभारम्भ होना अतिदुष्कर है। आयुर्वेद के प्रवर्तक श्रीधन्वन्तरि भगवान् श्रीविष्णु के अंशांश अवतार थे। "श्रीमद्भागवत" अष्टम स्कन्ध के अध्याय ८ में वर्णित "स वै भगवतः साक्षाद्विष्णोरशांश-सम्भवः" इस श्लोकत्मक वचन से स्पष्ट है।

अतः इसी रूप में श्रीसर्वेश्वर प्रभु के परम अनुग्रह से यह "श्रीधन्वन्तरि-कृपाष्टकं" लघुकलेवर स्वरूप रसिक भगवद्भक्त जनों के समक्ष है, जिसका अनुशीलन कर भगवत्स्वरूप श्रीधन्वन्तरि के दिव्य गुणगणों का परिज्ञान किया जा सके।

श्रीधन्वन्तरि के प्रसिद्ध इस महनीय वचन से अनुभव करें, यथा--

अच्युतानन्तगोविन्द नामोच्चारणभेषजात्।
नश्यन्ति सकला रोगाः सत्यं सत्यं वदाम्यहम्॥

अच्युत-अनन्त-गोविन्द, इन परम मङ्गलमय औषधरूप इन श्रीभगवन्नामों का अपनी रसना से उच्चारण करता है, उसके समस्त रोगों का निवारण हो जाता है, स्वयं श्रीधन्वन्तरि निरूपण

करते हैं कि यह मैं सत्यतापूर्वक द्वितीय-द्वितीय बार अभिव्यक्त करता हूँ।

वस्तुतः इस उपर्युक्त दिव्य वचन रूप मन्त्रमय श्लोक से अनेकों बार अनुभव किया जा चुका है कि कतिपय रुजाक्रान्त व्यक्ति पूर्णतः स्वस्थ हो जाते हैं। यह श्रीधन्वन्तरि का श्लोकात्मक वचन ही अतीव अनुपम है, जिसके समुच्चारण से अशक्य रोगों का परिहार हो जाता है। यद्यपि शारीरिक अवस्था सानुकूल नहीं है, तथापि भगवान् श्रीधन्वन्तरि की परमानुकम्पाप्रसाद से इस ग्रन्थ का प्रणयन संभव हो सका।

और श्रीधन्वन्तरि की प्रेरणा से ही उक्त ''श्रीधन्वन्तरि-कृपाष्टक'' स्तोत्र का प्रस्तुतीकरण हुआ है, जिसे परम भागवत भगवद्भक्तजन निश्चय ही परम लाभ प्राप्त करेंगे ऐसी स्वकीय मान्यता है। तथा अन्त में श्लोक-त्रय से भगवत्स्वरूप श्रीधन्वन्तरि एवं श्रीअश्विनीकुमारों का मंगलमय रूप अवलोकन करें-

धन्वन्तरिं कृपासिन्धुं नितरां प्रणमाम्यहम्।
अशेषसुरवृन्दैश्च मुनीन्द्रैरपि पूजितम्।।१।।
अथाश्विनीकुमारौ च देवरूपौ सुधाकरौ।
आयुर्वेदमहाशास्त्रे सुप्रसिद्धौ समाश्रये।।२।।
दिव्यौषधिप्रदातारौ देवचिकित्सकौ भजे।
सदाश्विनीकुमारौ वै सुरलोके दिवाकरौ।।३।।

शुभमिति-कार्तिक कृष्ण १३ सोमवार
श्रीधन्वन्तरि जयन्ती महोत्सव वि. सं. २०७२ दि. ९/११/२०१५

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

॥ श्रीसर्वेश्वरो जयति ॥

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

मङ्गलाचरणम्

(१)

नौमि सर्वेश्वरं देवं सनकाद्यैः प्रपूजितम्।
श्रीराधामाधवं हृद्यं प्रेमाभक्तिप्रदायकम्॥

(२)

श्रीनिम्बार्कं सदा वन्दे कृपासिन्धुं प्रभाकरम्।
श्रीहरिव्यासदेवञ्च जगद्गुरुं नमाम्यहम्॥

(३)

परशुराममाचार्यं जगद्गुरुं हृदा भजे।
प्रपन्नरक्षणे दक्षं सर्वशास्त्रविशारदम्॥

(४)

मदीयगरुदेवञ्च विख्यातं जगतीतले।
जगद्गुरुवरं श्रेष्ठं प्रणमामि पुनः पुनः॥

(५)

पूर्वाचार्यान्हृदा नत्वा श्रुत्यर्थरचनापरान्।
तन्यते मञ्जुलं स्तोत्रं धन्वन्तरिकृपाष्टकम्॥

श्रीधन्वन्तरि-कृपाष्टकम्

(१)

समुद्रमन्थनारम्भे सुधाकलशहस्तकम्।
जातं धन्वन्तरिं देवं भगवन्तं सदा भजे।।

समुद्र के मन्थन के प्रारम्भ में अमृत कलश को अपने कर कमलों में लिए भगवद्रूप श्रीधन्वन्तरि प्रगट हुए उनका सदा सर्वदा भजन करते हैं।।१।।

(२)

शास्त्रेषु वर्णितं रूपं दिव्यौषधिकराम्बुजम्।
नित्यशः प्रणमामीशं धन्वन्तरिं कृपाऽर्णवम्।।

पुराणादि शास्त्रों में जिनके स्वरूप का परिवर्णन है, और परम दिव्य औषधियों को अपने हस्तारविन्द में धारण किये हुए कृपा के सागर श्रीधन्वन्तरिजी को प्रतिदिन प्रणाम करते हैं।।२।।

(३)

शंख-चक्रकराम्भोजं मङ्गलदण्डधारिणम्।
धन्वन्तरिं हृदा वन्दे प्रचुरगुणसागरम्।।

शंख-चक्र एवं मङ्गल-स्वरूप दण्ड को अपने कर कमलों में धारण किये हुए अनन्त गुण सागर श्रीधन्वन्तरिजी को मनसा-वाचा-कर्मणा अभिवन्दन करते हैं।।३।।

(४)

इन्द्रादिसुरवृन्दैश्च गन्धर्वादिप्रपूजितम्।
असीमकरुणासिन्धुं धन्वन्तरिं समाश्रये।।

इन्द्र-गन्धर्व इत्यादि देवगणों के द्वारा जिनकी अर्चना की जाती है, ऐसे अपार करुणा के सागर श्रीधन्वन्तरिजी का आश्रय लेतें हैं।।४।।

(५)

वन्दारुवृन्दगेयञ्च ध्येयं सद्भिः सुधीवरैः।
एवं धन्वन्तरिं वन्दे चारुदर्शनरूपिणम्।।

बन्दीजनों के द्वारा जिनका गान किया जाता हैं एवं सन्त-महात्माओं विद्वज्जनों द्वारा जिनका ध्यान किया जाता है ऐसे दिव्य दर्शनीय जिनका स्वरूप हैं उन श्रीधन्वन्तरि का अभिवन्दन करते हैं।।५।।

(६)

सर्वदा सर्वसम्पूज्यं निगमागमवर्णितम्।
आनन्दसमधिष्ठानं धन्वन्तरिं भजे प्रियम्।।

वेद-पुराणादि शास्त्रों में जिनका वर्णन किया गया है ऐसे सभी द्वारा सर्वप्रकार से जिनकी अर्चना की जाती है आनन्द के एकमात्र जिनका स्वरूप वर्णित है, ऐसे परम श्रेष्ठ श्रीधन्वन्तरिजी का भजन करते हैं।।६।।

(७)

ज्ञान-विज्ञानकेन्द्रश्च जगच्चारुहितास्पदम्।
औषधिदानसद्धेतुं नौमि धन्वन्तरिं मुदा।।

ज्ञान-विज्ञान के परम ज्ञाता जगत् कल्याण के लिए सर्वदा तत्पर तथा विभिन्न प्रकार की दिव्य ओषधियों को प्रदान करने वाले श्रीधन्वन्तरिजी का प्रसन्नता पूर्वक अभिनमन करते हैं।।७।।

(८)

श्रेयस्करं दयासिन्धुं दीनबन्धुं नमाम्यहम्।
धन्वन्तरिं महाभागं महामङ्गलरूपकम्।।

सबका कल्याण चाहने वाले दया के अपार सागर जो दीनबन्धु हैं, ऐसे महामङ्गल रूप महाभाग श्रीधन्वन्तरिजी का हम नमन करते हैं।।८।।

(९)

आरोग्यदानदातारं धन्वन्तरिकृपाष्टकम्।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम्।।

रोगादिकों का निवारण करने वाला यह श्रीधन्वन्तरि कृपाष्टकम जिसकी रचना उन्हीं के कृपाजन्य यहाँ प्रस्तुत है।।९।।

श्रीधन्वन्तरि-वन्दना

(१)

कलश कराब्ज धारण किये, धन्वन्तरि महाराज।
दर्शन इनके मधुरमय, ''शरण'' प्रणति कविराज।।

(२)

शंख-चक्र धारण किये, हस्तकमल शुभ दण्ड।
अतीव शुभ रूप धन्वन्तरि, ''शरण'' विचार प्रचण्ड।।

(३)

विविध औषधि कराब्ज है, ज्ञान-विज्ञान महान।
ध्यान धरहि श्रीधन्वन्तरि, ''शरण'' विलय अज्ञान।।

(४)

अनुपम कार्य महान है, विदित सकल संसार।
एवञ्च श्रीधन्वन्तरि, ''शरण'' शास्त्र का सार।।

(५)

सकल शास्त्र भी भणत है, श्रीधन्वन्तरि महान।
बारम्बार प्रणाम है, ''शरण'' सुमानस ध्यान।।

(६)

रस-औषधि अति दिव्य है, सेवन से दुःख जात।
कथन धन्वन्तरि श्रेष्ठतम, ''शरण'' परम सम्मान।।

(७)

कानन-औषधि विदित है, करत रोग परिहार।
यही भावना धन्वन्तरि, ''शरण'' प्रकट संसार।।

(८)

जयति जयति धन्वनतरि, अनुपम रूप निहार।
गावत महिमा सकल जन, ''शरण'' महोत्सव धार।।

(९)

वन्दीजन भी गावत है, गरिमा परम अपार।
शुभ सुयश श्रीधन्वन्तरि, ''शरण'' असीम प्रचार।।

(१०)

धन्वन्तरि विहरत सदा, भुवन चतुर्दश जान।
सकल सुरगण हर्षित हो, ''शरण'' प्रणति ध्रुव मान।।

(११)

धन्वन्तरि अभिवन्दना, करहि निर्जर समाज।
प्रमुदित हो मनसा गिरा, ''शरण'' निजी तज मान।।

(१२)

धन्वन्तरि जयन्ती शुभ, दिवस मनोहर मान।
सकल मुनिवर पुलकित हो, ''शरण'' चित्त अवधान।।

(१३)

करुणासागर धन्वन्तरि, विहरत मही महान।
शुक-पिक गावत सुयश नित, ''शरण'' करहि हिय ध्यान।।

(१४)

परम पूजनीय धन्वन्तरि, प्रीति करहि नित ध्यान।
अनन्त मुनिजन जय करत, ''शरण'' श्रेष्ठ सम्मान।।

(१५)

कोटि-कोटि अभिनमन है, सुन्दर नाम महान।
धन्वन्तरि ध्यावो सदा, ''शरण'' पदाम्बु सुपान।।

(१६)

चलो चलो दर्शन करहु, धन्वन्तरि सुख कोष।
अपूर्व निष्ठा करत है, ''शरण'' सदा सन्तोष।।

(१७)

सकल तीर्थ में दरश प्रिय, हर्षित जन समुदाय।
धन्वन्तरि नित आर्तिहर, ''शरण'' सुशोभित आय।।

(१८)

हरित द्रुमावलि अति सुभग, जहाँ विराजत आप।
धन्वन्तरि शोभा महा, ''शरण'' विलय संताप।।

(१९)

अहो कहा वर्णन करहु नहि है ज्ञान विधान।
तथापि धन्वन्तरि कृपा, ''शरण'' सुनिश्चय जान।।

(२०)

जय हो जय हो धन्वन्तरि, कूजत चातक-मोर।
नहि है सुशक्ति भावना, ''शरण'' मनोरम भोर।।

(२१)

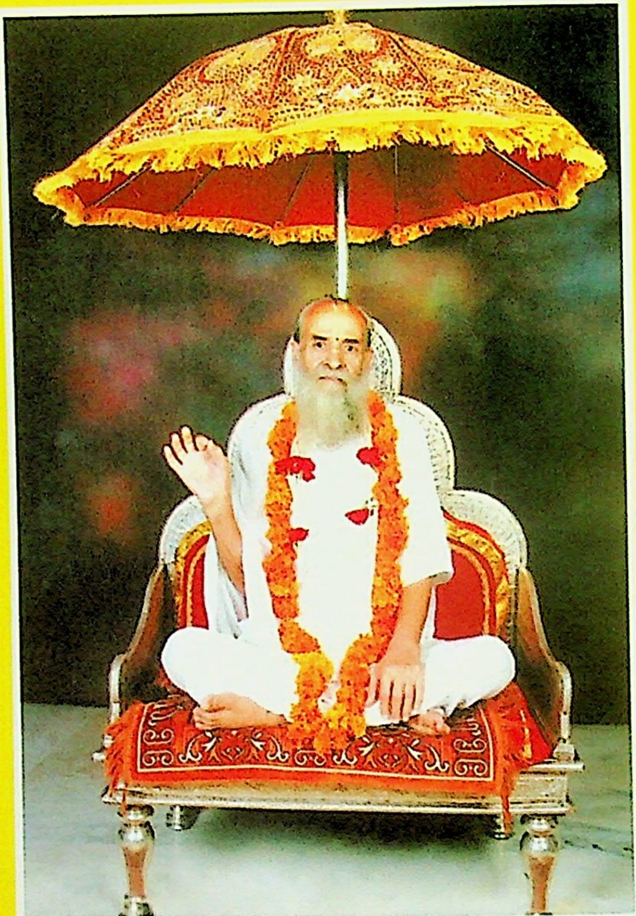
बाणी में सामर्थ्य नहि, धन्वन्तरि गुण गान।
राधासर्वेश्वरशरण, प्रणति करहि शुभ मान।।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री 'श्रीजी' महाराज द्वारा विरचित-

* ग्रन्थमाला *

१. प्रातःस्तवराज
२. श्रीयुगलगीतिशतकम्
३. उपदेश - दर्शन
४. श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु
५. श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः
६. श्रीराधामाधवशतकम्
७. श्रीनिकुञ्ज-सौरभम्
८. हिन्दु-संघटन
९. भारत-भारती-वैभवम्
१०. श्रीयुगलस्तवविंशतिः
११. श्रीजानकीवल्लभस्तवः
१२. श्रीहनुमन्महिमाष्टकम्
१३. श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्
१४. भारत कल्पतरु
१५. श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम्
१६. विवेक-वल्ली
१७. नवनीतसुधा
१८. श्रीसर्वेश्वरशतकम्
१९. श्रीराधाशतकम्
२०. श्रीनिम्बार्कचरितम्
२१. श्रीवृन्दावनसौरभम्
२२. श्रीराधासर्वेश्वरमंजरी
२३. श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्
२४. छात्र-विवेक-दर्शन
२५. भारत-वीर-गौरव
२६. श्रीराधासर्वेश्वरालोकः
२७. परशुराम-स्तवावली
२८. श्रीराधा-राधना
२९. मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका
३०. आचार्यपञ्चायतनस्तवनम्
३१. श्रीराधामाधवरसविलास
३२. गोशतकम्
३३. श्रीसीतारामस्तवादर्शः
३४. स्तवमल्लिका
३५. श्रीरामस्तवावली
३६. श्रीमाधवशरणापत्तिस्तोत्रम्
३७. दिव्यचरितप्रभा
३८. प्रेरणाशतकम्
३९. उद्गारशतकम्
४०. श्रीपीताम्बरदशश्लोकी
४१. श्रीयुगलस्तववल्ली
४२. श्रीस्तवाराधना
४३. श्रीनिम्बार्कवेदान्ततत्त्वदर्शिका
४४. श्रीस्तवोपासना
४५. श्रीधन्वन्तरिकृपाष्टकम्



श्रीमन्निखिलमहीमण्डलाचार्य, चक्र-चूड़ामणि, सर्वतन्त्र - स्वतन्त्र, द्वैताद्वैतप्रवर्तक, यतिपतिदिनेश, राजराजेन्द्रसमभ्यर्चितचरणकमल, भगवन्निम्बार्काचार्यपीठविराजित, अनन्तानन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ -सलेमाबाद